

tu
ट्रांसयूनियन सिबिल



एम् एस एम् इ
पल्स

जनवरी 2020

विश्लेषणात्मक संपर्क

ट्रान्सयूनियन सिबिल

विपुल महाजन

vipul.mahajan@transunion.com

सलोनी सिन्हा

saloni.sinha@transunion.com

सिडबी

रुद्र प्रसन्न मिश्र

rudrapmishra@sidbi.in

विषयसूची

pg. 02
कार्यकारी सारांश

pg. 04
वाणिज्यिक वित्तीयन - संविभाग और
अनर्जक आस्ति की प्रवृत्तियाँ

pg. 07
व्यापार आवर्त के क्रम में एमएसएमई
ऋण आधारित परिभाषा

pg. 09
व्यक्तिगत घटकों को एमएसएमई ऋण

pg. 10
एनबीएफसी ने खोया बाजार का हिस्सा

pg. 13
एमएसएमई की अधिग्रहण रूपरेखा में बदलाव
- अधिक जोखिम वाले ग्राहकों का सम्मिलन

pg. 14
अधिग्रहणों का घटकवार विभाजन और एक वर्ष
बाद श्रेणी में गिरावट

15
अधिग्रहणों का अवधि के अनुसार विभाजन
और एक वर्ष बाद श्रेणी में गिरावट

16 pg.
अधिग्रहणों का सीएमआर विभाजन और एक
वर्ष बाद श्रेणी में गिरावट

pg. 17
गैर-निधि आधारित ऋण और विदेशी मुद्रा ऋण
पर एक अध्ययन

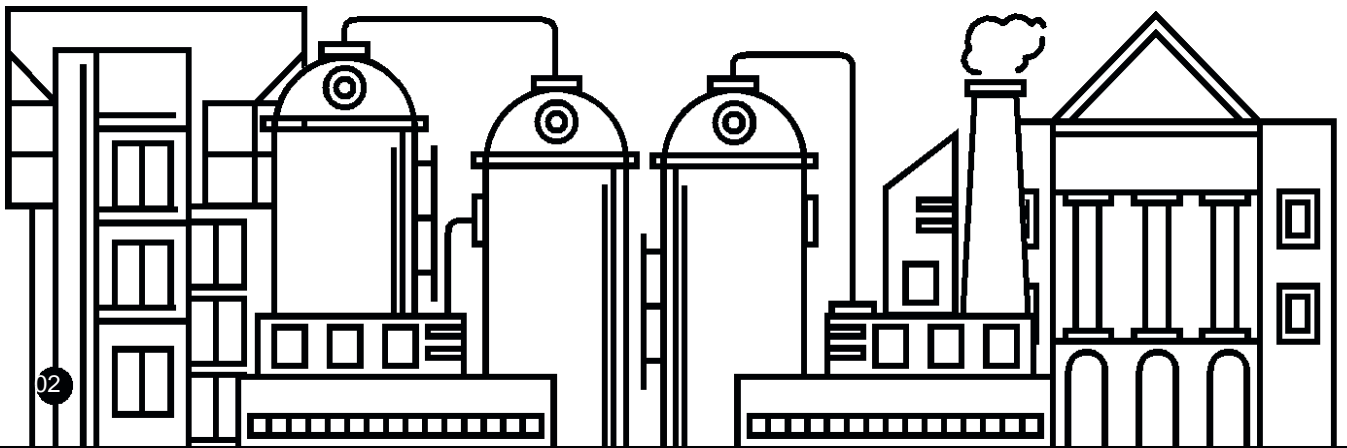
pg. 19
निष्कर्ष

कार्यकारी सारांश

विगत कुछ तिमाहियों में वाणिज्यिक ऋण की वृद्धि धीमी हो गई है: पिछले कुछ वर्षों में वाणिज्यिक ऋण में लगातार बढ़त हो रही है, वह पिछले कुछ तिमाहियों में धीमी हो गई है। सितंबर 19 की समाप्त तिमाही में भारत में कुल तुलन-पत्र वाणिज्यिक उधार जोखिम ₹ 65.0 लाख करोड़ है। सितंबर 19 की समाप्त तिमाही में वर्षानुवर्ष (YOY) वाणिज्यिक ऋण संवृद्धि 8.1% थी। जबकि, दिसंबर 17 से दिसंबर'18 की अवधि के लिए वृद्धि दर 16.2% थी, मार्च 18 से मार्च 19 में यह 12.6% थी और जून 18 से जून 19 में यह 14.8% थी। तिमाहीवार तुलना के अनुसार सितंबर की तिमाही की समाप्ति पर एक्सपोजर का स्तर मार्च 19 और जून 19 को समाप्त तिमाही की तुलना में अधिक है। अन्य तिमाहियों की वार्षिक ऋण संवृद्धि की तुलना में सितंबर 19 में वर्षानुवर्ष संवृद्धि सभी घटकों में निम्नतम रही है।

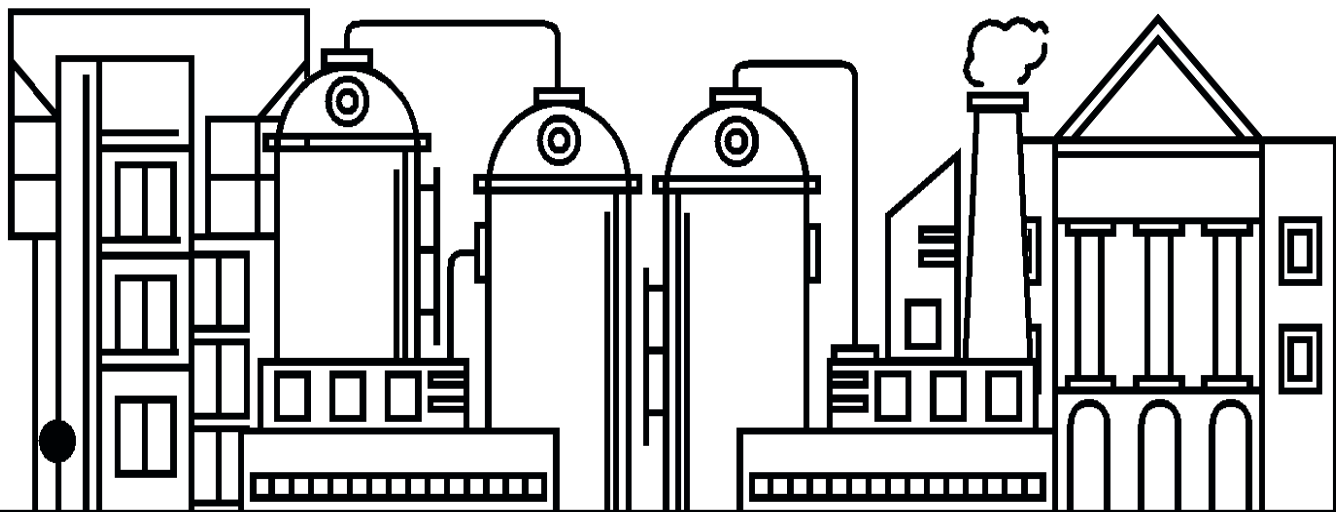
एमएसएमई घटक में ₹50 करोड़ तक के कुल ऋण एक्सपोजर का हिस्सा ₹18.3 लाख करोड़ बकाया है (~ वाणिज्यिक ऋण बकाया का 28%)। बड़े कॉर्पोरेट में ₹ 50 करोड़ तक के कुल ऋण एक्सपोजर का हिस्सा ₹46.7 लाख करोड़ है (वाणिज्यिक ऋण बकाया का 72%)। सूक्ष्म (₹1 करोड़ से कम), लघु (₹1 करोड़ से ₹15 करोड़) और मध्यम (₹15 करोड़ से ₹50 करोड़) घटकों ने सितंबर,18 से सितंबर 19 की अवधि में वर्षानुवर्ष क्रमशः 7.7%, 4.6%, 1.9% की संवृद्धि दर्ज की है।

वाणिज्यिक आस्ति की गुणवत्ता में सीमांत सुधार: वाणिज्यिक उधार की समग्र एनपीए दर सितंबर 19 में 16.8% थी, जो सितंबर 18 में 17.0% से थोड़ा कम थी। ऐसे समय में जब वाणिज्यिक ऋण वृद्धि धीमी हो रही थी, वर्ष में 8.1% की वृद्धि हुई, सकल एनपीए में केवल 6.8% की वृद्धि हुई है, जिसके परिणामस्वरूप एनपीए की दर में 20 आधार अंकों की कमी आई है। सितंबर 18 में सकल एनपीए राशि ₹10.2 लाख करोड़ से बढ़कर सितंबर 19 में ₹10.9 लाख करोड़ हो गई। ज्ञातव्य है कि वाणिज्यिक उधार में एनपीए की दर जून 18 में 17.5% के चरम पर थी, लेकिन विभिन्न सुधार उपायों के कारण, यह घटकर 16.8% हो गई। एमएसएमई घटक में, एनपीए की दर सितंबर 18 में 11.7% से बढ़कर सितंबर 19 में 12.2% हो गई है।



एनबीएफसी के आस्ति स्तर में गिरावट के साथ बाजार में हिस्सेदारी घटी : सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक जो परंपरागत रूप से एमएसएमई घटक के सबसे बड़े ऋणदाता रहे हैं, उनका सूक्ष्म घटक में ऋण का 60% हिस्सा है। उधारकर्ताओं के छोटे घटक में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक और निजी बैंकों की हिस्सेदारी तुलनीय है, जिसमें प्रत्येक की बाजार हिस्सेदारी ~ 44% है। लघु और मध्यम आकार के उद्यमों के ऋण घटक में एनबीएफसी की हिस्सेदारी छोटे और लघुतर और कम औपचारिक एमएसएमई घटक की तुलना में अधिक है। पिछले कुछ वर्षों में, निजी बैंकों और एनबीएफसी ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों से एमएसएमई उधार की बाजार हिस्सेदारी हासिल करने में सफलता प्राप्त की है। तथापि, जून 19 को समाप्त होने वाली तिमाही में, एनबीएफसी के हिस्से में पिछले दो वर्षों में पहली बार गिरावट आई थी। एनबीएफसी ने सितंबर में समाप्त होने वाली तिमाही में एनपीए दरों में वृद्धि देखी है।

एमएसएमई वित्तीयन कम पुराने, अधिक जोखिम वाले उधारकर्ताओं और लघुतर आकार के एमएसएमई इकाईयों की ओर बढ़ा है: अधिग्रहण की बदलती प्रोफाइल को पुरानापन (विंटेज), सीएमआर विभाजन और उधारकर्ता के आकार जैसे कारकों का उपयोग करके मापा जाता है। साथ ही, उधारकर्ता की प्रोफाइल में परिवर्तन का प्रभाव मंजूरी और नवीकरण के एक वर्ष के भीतर उधारकर्ताओं की श्रेणी में गिरावट के माध्यम से मापा जाता है। अध्ययन से पता चलता है कि एमएसएमई उधारकर्ताओं की श्रेणी में गिरावट दो अधिग्रहण अवधि (जुलाई-सितंबर 17 और जुलाई-सितंबर 18) के लिए 2.94% से बढ़कर 3.02% हो गई है। वे कारक जो मामूली रूप से उच्च गिरावट दर में योगदान करते हैं, वे हैं (i) अधिग्रहण अवधि, जुलाई-सितंबर 18 में सूक्ष्म घटक में अधिग्रहण बढ़कर 66.7% हो गया जबकि अधिग्रहण की अवधि जुलाई-सितंबर 17 में यह 61.9% था। (ii) अधिग्रहीत उधारकर्ताओं के अवधि विभाजन से पता चलता है कि उधार की हिस्सेदारी वित्तीय वर्ष 19 के तिमाही 2 में कम पुराने उधारकर्ता की ओर बढ़ी है। (iii) अधिग्रहण के सीएमआर विभाजन से पता चलता है कि उच्चतम जोखिम वाले खंड में अधिग्रहण किए गए उधारकर्ताओं का अनुपात 13.5% से बढ़कर 15.7% हो गया है, जो खराब दर की वृद्धि में योगदान करता है।



वाणिज्यिक वित्तीयन – संविभाग और अनर्जक आस्ति की प्रवृत्तियाँ

भारत में तुलन-पत्र आधार पर वाणिज्यिक वित्तीयन एकस्पोज़र सितंबर 19 में बढ़कर ₹65.0 लाख करोड़ हो गया जो सितंबर 18 में ₹60.2 लाख करोड़ था, यह संवृद्धि वर्षानुवर्ष 8.1% रही। एमएसएमई घटक में ₹50 करोड़ तक के कुल ऋण एकस्पोज़र का हिस्सा ₹18.3 लाख करोड़ है (~वाणिज्यिक ऋण बकाया का 28%)। बड़े कॉर्पोरेट में ₹50 करोड़ तक के कुल ऋण एकस्पोज़र का हिस्सा ₹46.7 लाख करोड़ है (वाणिज्यिक ऋण बकाया का ~72%)।

ऐसी वाणिज्यिक इकाईयां जिसका समग्र ऋण एकस्पोज़र ₹1 करोड़ तक है उन्हें सूक्ष्म घटक के रूप में और ₹1 करोड़ से ₹15 करोड़ के बीच समग्र ऋण एकस्पोज़र वाले लघु और ₹15 करोड़ से ₹50 करोड़ के समग्र ऋण एकस्पोज़र वाली इकाईयां को मध्यम इकाई के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

सूक्ष्म (₹1 करोड़ से कम), लघु (₹1 करोड़ से ₹15 करोड़) और मध्यम (₹15 करोड़ से ₹50 करोड़) घटकों ने सितंबर, 18 से सितंबर 19 की अवधि में वर्षानुवर्ष क्रमशः 7.7%, 4.6%, 1.9% की संवृद्धि दर्ज की है। आगे, सूक्ष्म को अति लघु (₹10 लाख क्रेडिट तक), सूक्ष्म 1 (₹10 लाख- ₹50 लाख) और सूक्ष्म 2 (₹50 लाख-₹1 करोड़) के रूप में वर्गीकृत किया गया है। इसी अवधि के दौरान अति लघु, सूक्ष्म 1 और सूक्ष्म 2 घटक क्रमशः 6.1%, 8.4% और 7.5% संवृद्धि के साथ बढ़े हैं।

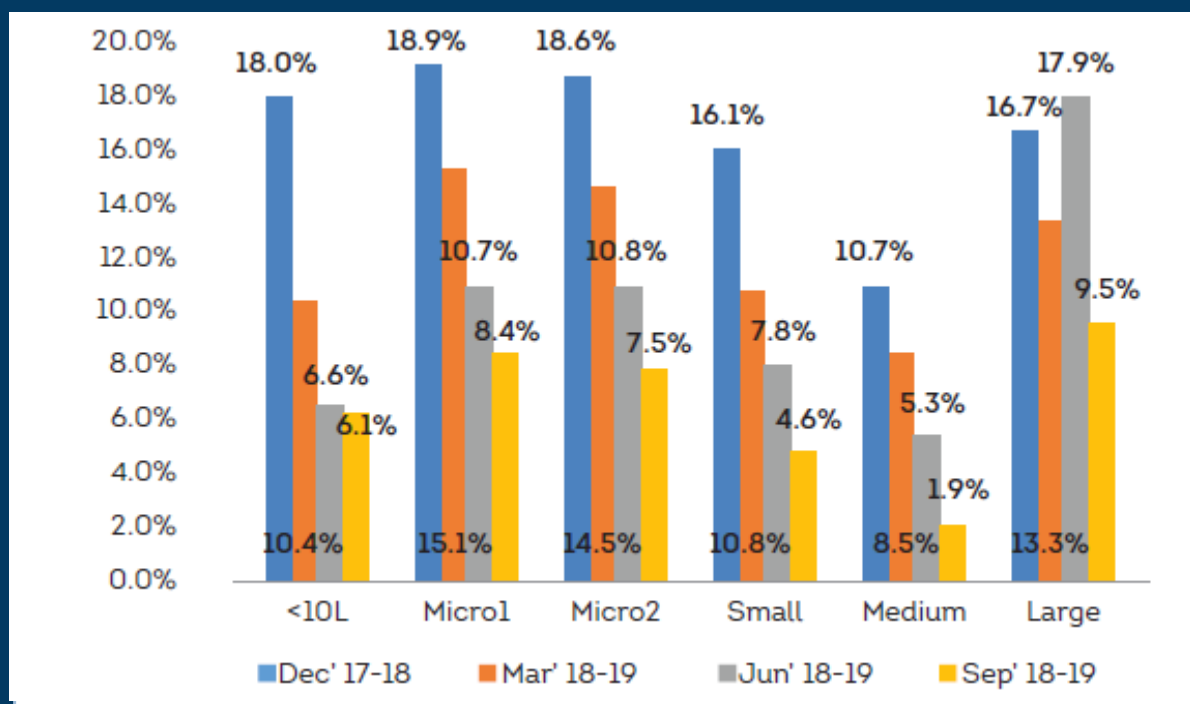
बड़े (₹ 50करोड़ से अधिक) घटक ने सितंबर 18 से सितंबर 19 तक 9.5% की उचित वृद्धि दर्शाई।

	अति लघु <₹10 लाख	सूक्ष्म1 ₹10-50 लाख	सूक्ष्म2 ₹50 लाख -1 करोड़	लघु ₹1-15 करोड़	मध्यम ₹15-50 करोड़	बड़े >₹50 करोड़	समग्र
सितं'17	0.73	1.75	1.16	6.96	4.08	34.74	49.42
दिसं'17	0.75	1.85	1.26	7.67	4.32	37.16	53.01
मार्च'18	0.83	1.97	1.35	8.27	4.56	40.61	57.60
जून'18	0.84	2.00	1.37	8.39	4.58	39.27	56.45
सितं'18	0.84	2.05	1.41	8.54	4.65	42.68	60.17
दिसं'18	0.89	2.20	1.50	8.91	4.79	43.35	61.63
मार्च'19	0.92	2.26	1.55	9.16	4.95	46.00	64.85
जून'19	0.89	2.22	1.52	9.04	4.82	46.30	64.80
सितं'19	0.89	2.23	1.52	8.93	4.74	46.74	65.04
वर्षानुवर्ष संवृद्धि (सितं 18- सितं 19)	6.1%	8.4%	7.5%	4.6%	1.9%	9.5%	8.1%

Exhibit 1: on Balance-Sheet Commercial Credit Exposure (In ₹ Lakh Crore)

विभिन्न घटकों की वर्षानुवर्ष त्रैमासिक विकास दर से पता चलता है कि हालिया तिमाहियों में ऋण वृद्धि धीमी हो गई है। अन्य तिमाहियों में वार्षिक ऋण वृद्धि की तुलना में सितम्बर 19 में वर्षानुवर्ष वृद्धि सभी घटकों में सबसे कम रही है। समग्र वर्षानुवर्ष वृद्धि सितंबर 18 की तुलना में सितंबर 19 में 8.1% तक कम हो गई है। तथापि, दिसंबर 17 से दिसंबर 18 की अवधि के लिए वृद्धि दर 16.2% थी, मार्च 18 से मार्च 19 में यह 12.6% और जून 18 से जून 19 में 14.8% रही।

प्रदर्श 2 : विभिन्न घटकों में ऋण वृद्धि तिमाही वर्षानुवर्ष

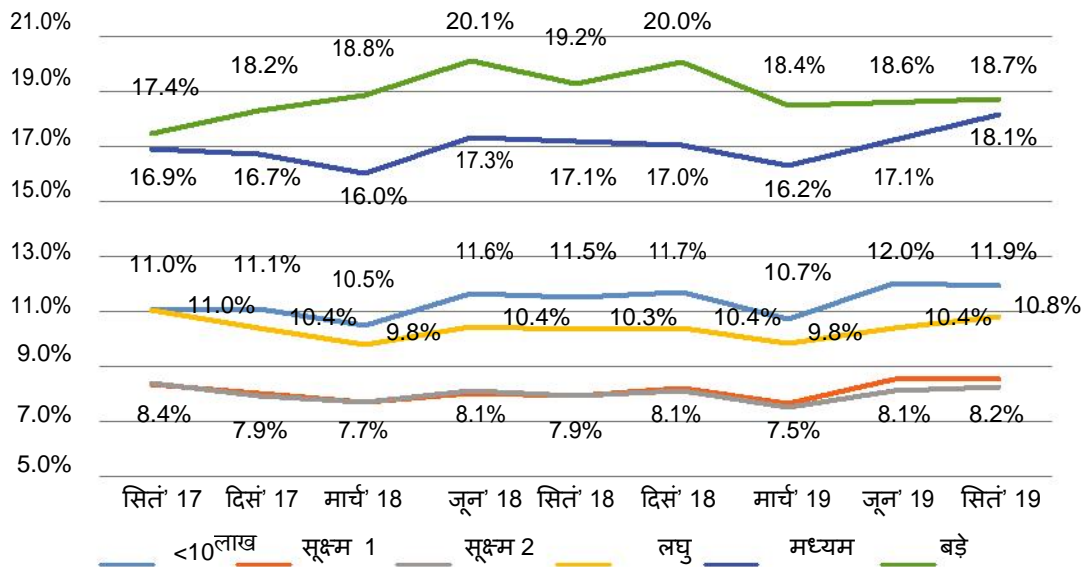


प्रदर्श 2 : विभिन्न घटकों में ऋण वृद्धि तिमाही वर्षानुवर्ष

वाणिज्यिक वित्तीयन में एनपीए प्रवृत्तियाँ: सितंबर 19 में वाणिज्यिक वित्तीयन में समग्र एनपीए दर 16.8% रही जो सितंबर 18 के 17.0% से आंशिक रूप में कम थी। जबकि ऋण एक्सपोजर में 8.1% की वृद्धि हुई है, सकल एनपीए 6.8% बढ़ा है जिसके परिणामस्वरूप एनपीए दर में 20 आधार बिन्दुओं की कमी हुई है।

यदि हम विभिन्न घटकों की ओर बढ़ते हैं तो सूक्ष्म 1, सूक्ष्म 2 और लघु घटक में एनपीए की दरें सीमाबद्ध हैं। सूक्ष्म / लघु घटक में ऋण एक्सपोजर और सकल एनपीए राशि में वृद्धि दर तुलनीय है।

एमएसएमई घटक में बड़े आकार के एक्सपोजरों में एनपीए दरें उच्च रही। इस प्रवृत्ति का अपवाद अति लघु घटक (₹10 लाख से कम एक्सपोजर) रहा जिसकी एनपीए दर सितंबर 19 में 11.9% पर उच्चतर रही। सितंबर 19 में मध्यम और बड़े कॉर्पोरेट घटक ने भी 18% की उच्चतर एनपीए दर प्रदर्शित की।



प्रदर्श 3 : घटकवार एनपीए दर



व्यापार आवर्त के क्रम में एमएसएमई ऋण आधारित परिभाषा

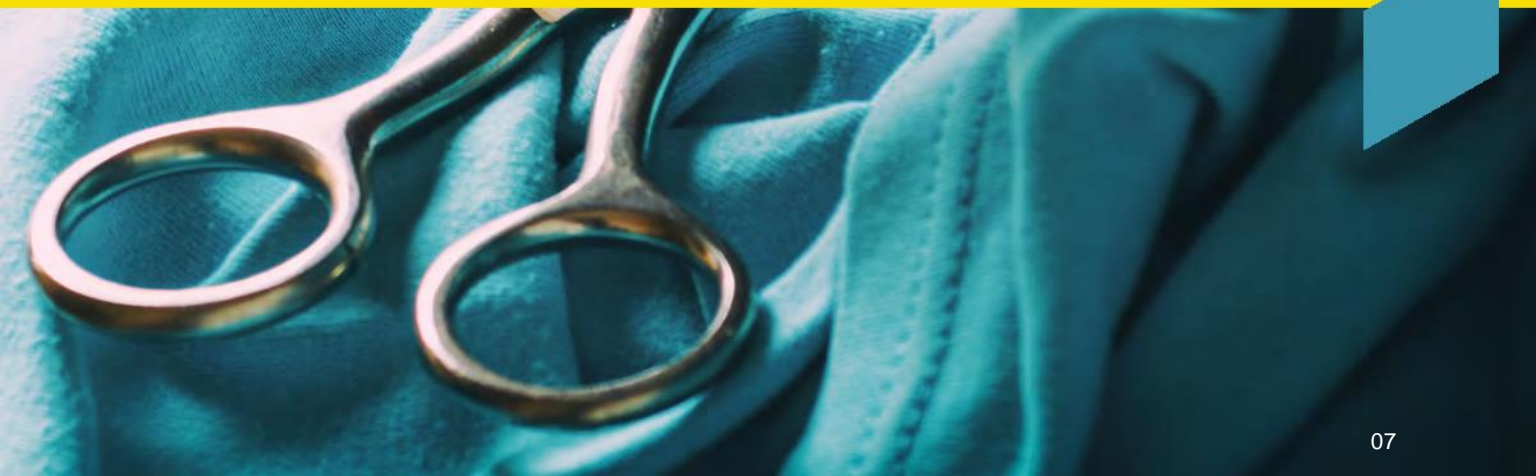
इकाईयों के कुल कारोबार और उधार की अतिव्याप्ति: एमएसएमई इकाईयों का वर्गीकरण वार्षिक कुल कारोबार के आधार पर किया जा सकता है।:

- सूक्ष्म उद्यम - वार्षिक कुल कारोबार ₹5 करोड़ से कम
- लघु उद्यम - वार्षिक कुल कारोबार ₹5 करोड़ से ₹75 करोड़ के बीच
- मध्यम उद्यम - वार्षिक कुल कारोबार ₹75 करोड़ से ₹250 करोड़ के बीच
- बड़े उद्यम - वार्षिक कुल कारोबार- ₹250 करोड़ से अधिक

कुल उधार / ऋण के आधार पर एमएसएमई की परिभाषा:

ट्रांस यूनियन सिबिल एमएसएमई को वित्तीय उद्योग में कुल एक्सपोजर के आधार पर वर्गीकृत करता है, अर्थात् बैंकिंग और वित्तीय संस्थानों से लिया गया कुल उधार के आधार पर। ये एमएसएमई गैर-वित्तीय और वित्तीय सेवाओं सहित उद्योगों से संबंधित हैं।

कार्यप्रणाली: किसी भी संस्था के कुल कारोबार और ऋण के बीच सह-संबंध की तुलना करने के लिए, किसी अवधि के लिए कुल कारोबार और कुल उधार पर डेटा उधारकर्ताओं के एक नमूना सेट के लिए इकट्ठा किया जाता है। कुल उधार में बैंकों, वित्तीय संस्थानों के उधार प्रतिभूत और अप्रतिभूत दोनों तरह के उधार शामिल हैं।





घटक	परिभाषा आधारित कुल कारोबार (करोड़)	औसत कुल कारोबार (करोड़)	कर्ज़ का मध्यमान (करोड़)	कुल कर्ज़ का माध्यम (करोड़)	कुल एक्सपोजर पर आधारित एमएसएमई की परिभाषा	नमूना आकार (कुल कारोबार आधार)	ऋण(एफ) की सीमा में होने पर रिकॉर्ड	% एफ का ए के साथ संरेखित होने पर % मामले
	A	B	D	E	F	G	H	I
सूक्ष्म	<5	2.2	0.4	0.24	<₹1 करोड़	260	233	89.6%
लघु	5-75	31.0	5.4	3.96	₹1-15 करोड़	1,109	658	59.3%
मध्यम	75-250	140.0	22.5	19.03	₹15-50 करोड़	927	561	60.5%
एमएसएमई	<250	72.0	11.7	5.8	₹50 करोड़ तक	2,296	2206	96.1%
बड़े	250+	3628.7	578.5	117.54	₹ 50 करोड़ +	1,668	1377	82.6%

प्रदर्श 4: कुल कारोबार बनाम उद्यम के ऋण एक्सपोजर की तुलना

टिप्पणी: ₹250 करोड़ के कम के टर्नओवर बकेट में आने वाले 2,296 उधारकर्ताओं के नमूने से यह देखा गया है कि, 96% इकाईयां कुल उधारों के आधार पर एमएसएमई घटक के अंतर्गत आती हैं, यानी ₹50 करोड़ तक के उधार तक। अध्ययन से यह भी पता चलता है कि सूक्ष्म, लघु और मध्यम घटक में कुल उधारी का औसत क्रमशः 24 लाख, 3.96 करोड़ और 19.03 करोड़ है। यह एकदम स्पष्ट है कि सभी एमएसएमई इकाई घटकों के लिए कुल ऋण का औसत कुल ऋण एक्सपोजर / कुल उधार के आधार पर परिभाषित एमएसएमई इकाईयों की सीमा के भीतर है।

क्रेडिट एक्सपोजर के आधार पर एमएसएमई वर्गीकरण, उधारकर्ता को वर्गीकृत करने का एक प्रभावी तरीका है, क्योंकि यह कुल कारोबार के आधार पर वर्गीकृत की गई अधिकांश एमएसएमई को कवर करता है। इसलिए, एमएसएमई पल्स के इस संस्करण में एमएसएमई की परिभाषा को ऊपर वर्गीकृत बकेट में संशोधित किया गया है।

व्यक्तिगत घटकों को एमएसएमई ऋण

इस भाग में, अलग-अलग खंडों को दिए गए एमएसएमई ऋणों की चर्चा की गई है। व्यवसायिक उद्देश्य से दिए गए सभी व्यक्तिगत ऋणों को 'व्यक्तियों के लिए एमएसएमई ऋण' के रूप में माना गया है। वाणिज्यिक ऋणों के परिक्षेत्र में व्यक्तियों को दिए जा रहे एमएसएमई ऋणों (₹25 करोड़ तक) में लगातार वर्षानुवर्ष 22.7% वृद्धि दिखाई देती है। तुलनात्मक रूप से व्यक्तियों को व्यावसायिक उधार दिए जाने की उच्च दर ने एमएसएमई को उधार देने के उद्योग की संरचना में व्यक्तियों के पक्ष में बड़ा बदलाव पैदा किया है।

जोखिम राशि (₹ लाख करोड़)	बहुत छोटे ₹10 लाख से कम	माइक्रो 1 ₹10-50 लाख	माइक्रो 2 ₹50 लाख - 1 करोड़	एसएमई1 ₹1-15 करोड़	एसएमई2 ₹15-50 करोड़	एमएसएमई समग्रतः ₹ 50 करोड़ तक
सितंबर'17	1.73	2.69	0.67	2.57	0.49	8.15
दिसंबर'17	1.86	2.92	0.72	2.76	0.51	8.78
मार्च'18	2.02	3.23	0.81	3.10	0.63	9.79
जून'18	2.12	3.43	0.84	2.99	0.66	10.04
सितंबर'18	2.36	3.72	0.89	3.16	0.74	10.88
दिसंबर'18	2.58	4.03	0.96	3.36	0.79	11.72
मार्च'19	2.81	4.39	1.03	3.57	0.83	12.63
जून'19	2.91	4.56	1.07	3.72	0.89	13.15
सितंबर'19	2.85	4.62	1.13	3.84	0.93	13.37
वर्षानुवर्ष ऋण संवृद्धि (सितं' 18 - सितं' 19)	21.00%	24.30%	26.10%	21.40%	25.6%	23.0%

प्रदर्श्य 5: व्यक्तिगत खंड के लिए एमएसएमई ऋण (ऋण जोखिम राशि ₹ लाख करोड़)

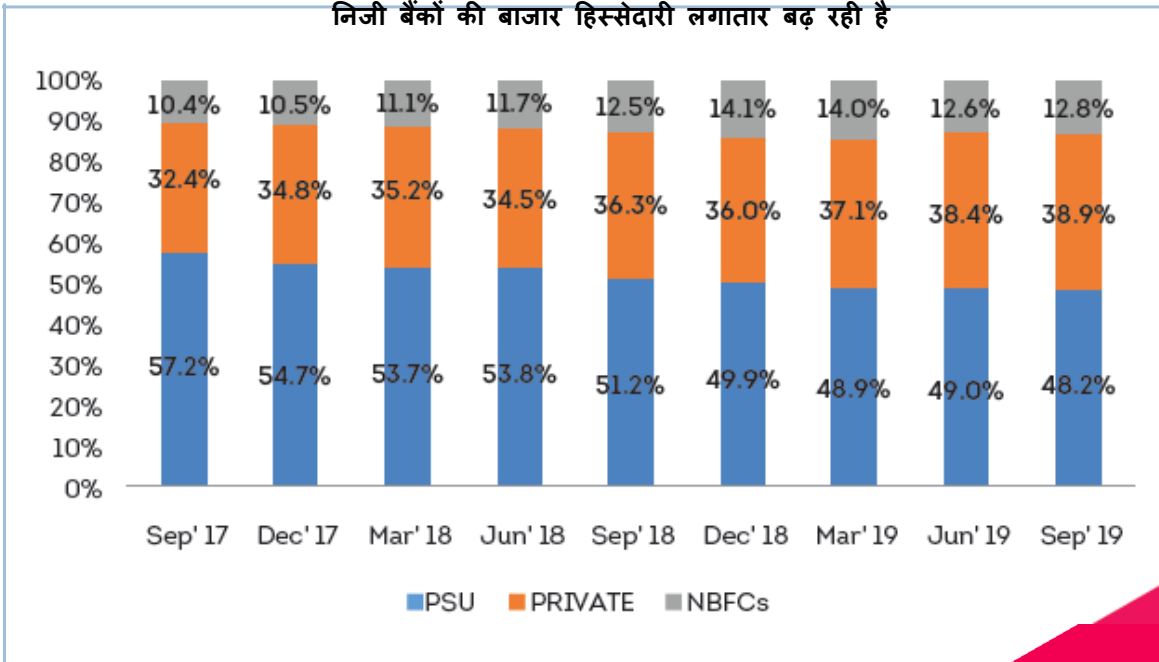
एनबीएफसी ने खोया बाज़ार का हिस्सा

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक पारंपरिक रूप से एमएसएमई क्षेत्र के प्रमुख ऋणदाता रहे हैं। जून'19 से पूर्व पिछली कुछ तिमाहियों में निजी बैंकों और एनबीएफसी ने एमएसएमई क्षेत्र को ऋण का एक बड़ा हिस्सा प्राप्त करने में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के साथ सफलतापूर्वक प्रतिस्पर्धा की है। हालांकि, जून 19 को समाप्त तिमाही में, एनबीएफसी के हिस्सेदारी में दो साल में पहली बार गिरावट आई है।

बाज़ार-हिस्सेदारी की गत्यात्मकता: निजी क्षेत्र के बैंकों का एमएसएमई को उधार सितंबर'18 से सितंबर'19 में 11.5% से बढ़ गया है। एक साल पहले एमएसएमई के उधार में निजी बैंकों की बाजार हिस्सेदारी जो सितंबर'18 में 36.3% थी, सितंबर'19 में बढ़कर 38.9% हो गई है।

एमएसएमई ऋण देने में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की बाजार हिस्सेदारी सितंबर'18 के 51.2% से गिरकर सितंबर'19 में 48.2% रह गई है, जबकि इसमें जून'19 में मामूली वृद्धि दर्ज की गई है। एनबीएफसी की बाजार हिस्सेदारी पिछली दो तिमाहियों में कम हुई है।

निजी बैंकों की बाजार हिस्सेदारी लगातार बढ़ रही है

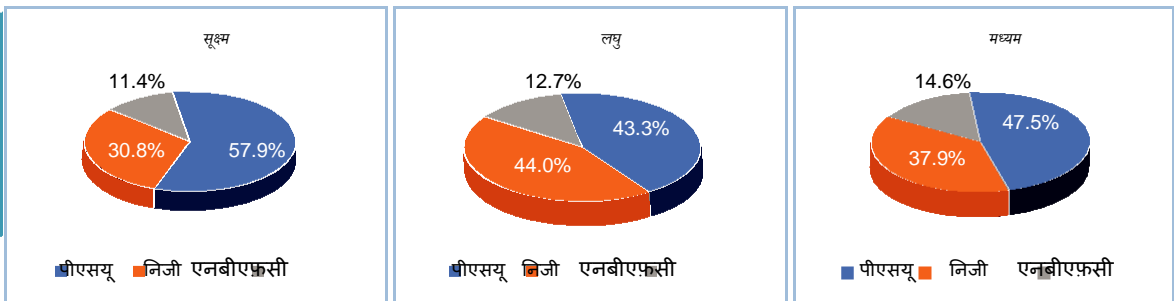


प्रदर्श 6: गत 2 वर्षों में एमएसएमई के उधारदाताओं की आनुपातिक हिस्सेदारी

• बाज़ार हिस्सेदारी के विश्लेषण हेतु अन्य उधारदाताओं को छोड़ दिया गया है

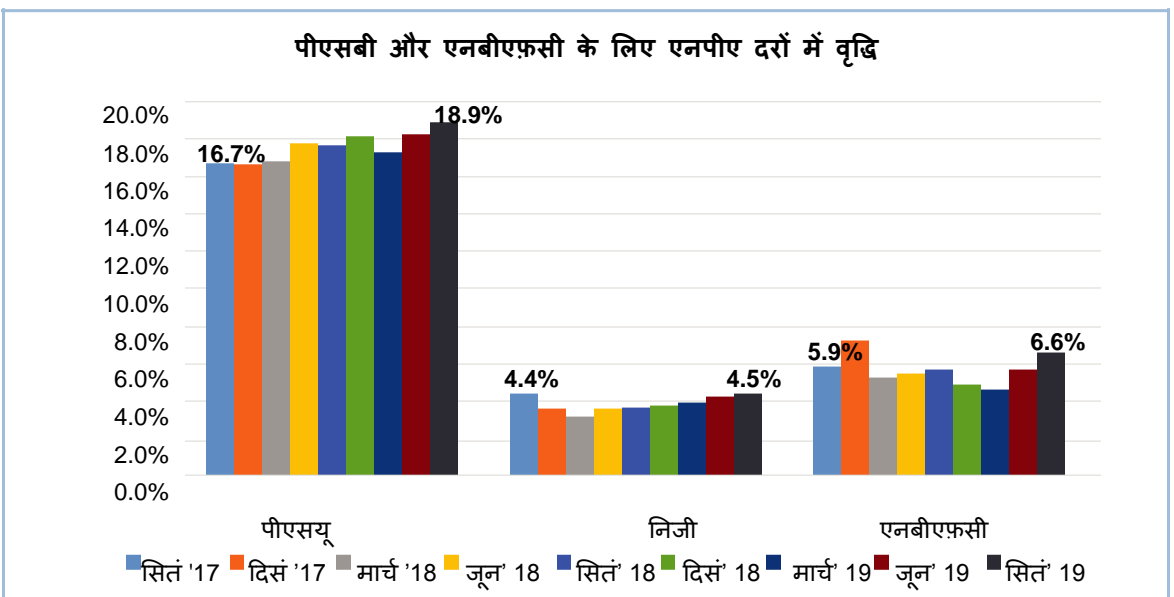
विविध खंडों में उधारदाताओं की हिस्सेदारी: सूक्ष्म खंड में 60% की हिस्सेदारी के साथ पीएसयू बैंक इस खंड को ऋण तक पहुँच प्रदान करने में लगातार प्रमुखता बनाए हुए हैं। पीएसयू बैंक, सूक्ष्म उद्यमों के वित्तीय समावेशन को संभव बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए दिखाई देते हैं।

लघु उधारकर्ताओं के खंड में पीएसयू बैंक और निजी बैंकों की हिस्सेदारी तुलनीय है, जिनमें से प्रत्येक की बाजार हिस्सेदारी 44% है। सूक्ष्म और कम औपचारिक खंड की तुलना में एनबीएफसी की हिस्सेदारी लघु और मध्यम आकार के एमएसएमई खंड में अधिक है।



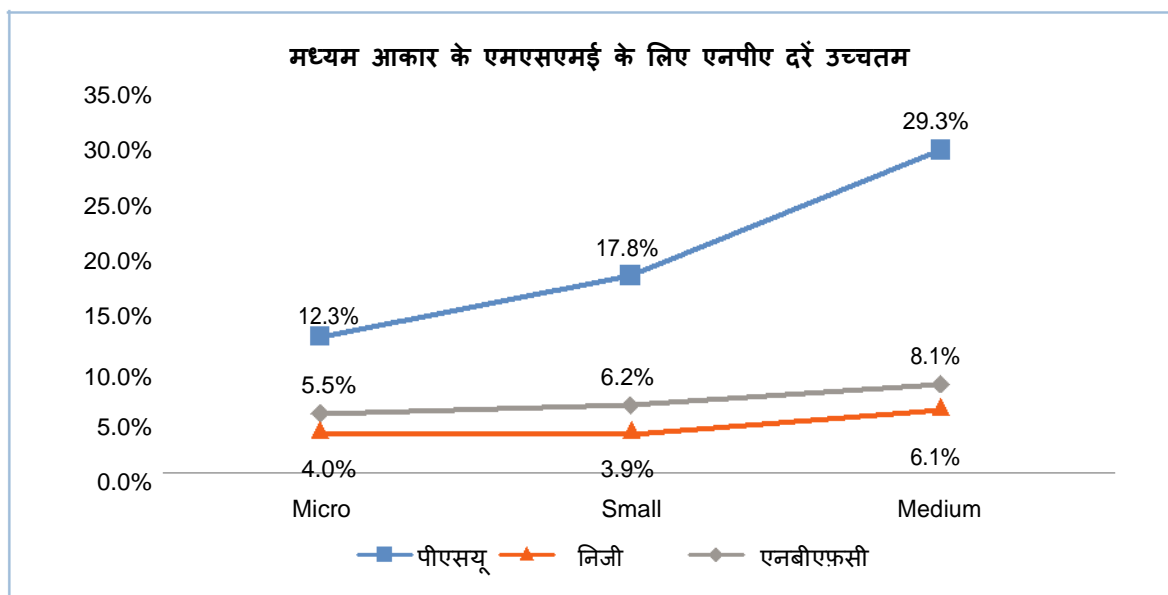
प्रदर्श्य 7: एमएसएमई के विविध खंडों में उधारदाताओं की हिस्सेदारी

गैर-निष्पादक आस्तियां: निजी बैंक, एमएसएमई खंड में 3%-4% की सीमा में एनपीए के स्तर को प्रदर्शित करते हैं। इसी के अंतर्गत, निजी क्षेत्र के नए बैंक चूक की न्यूनतम दर प्रदर्शित करते हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का एनपीए स्तर सितंबर'18 के 17.7% से बढ़कर सितंबर'19 में 18.9% हो गया है। सितंबर'19 में समाप्त हुई तिमाही में एनबीएफसी ने भी एनपीए की दरों में वृद्धि दर्ज की है।



प्रदर्श्य 8: एमएसएमई खंड में उधारदाताओं के प्रकारानुसार एनपीए दर

पीएसबी और एनबीएफ़सी की एनपीए दरें सूक्ष्म खंड में निम्नतर हैं।
सभी उधारदाताओं में मध्यम आकार के एमएसएमईज़ के लिए एनपीए दर उच्चतम है।



प्रदर्श्य 9: समूचे एमएसएमई खंड में उधारदाताओं के प्रकारानुसार एनपीए की दरें।

एमएसएमई इकाइयों के अधिग्रहण प्रोफाइल में बदलाव - अधिक जोखिम वाले ग्राहकों का सम्मिलन

चूंकि एमएसएमई क्षेत्र-विशेष में एनपीए की स्थिति निरंतर बढ़ती जा रही हैं, इसलिए इसकी वर्धमान प्रक्रिया के मूल में स्थित कारकों का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है। एनपीए समुच्चय में नए अधिग्रहण और नवीकरण के प्रभाव के विश्लेषण के उद्देश्य से, जुलाई से सितंबर -17 (ति. 2 - विव 18) और एक वर्ष के पश्चात् समानानंतर अवधि जुलाई से सितंबर -18 (ति. 2 - विव 19) के दौरान विभिन्न उधारकर्ताओं को मंजूर या नवीनीकृत ऋणों को ध्यान में रखते हुए अध्ययन संपन्न किया गया है। जोखिम संबंधी प्रभाव के अवलोकन की दृष्टि से ऐसे अधिगृहीत उधारकर्ताओं की खराब दर एक वर्ष के पश्चात् भी देखी गई है। खराब दर की सीमा एनपीए के रूप में चिह्नित ऐसे उधारकर्ताओं की समानुपाती संख्या के रूप में परिभाषित की गई है, जिनका अधिग्रहण के 12 महीने के भीतर कम से कम एक खाता एनपीए हो या कुल खातों को नवीनीकृत किया गया हो। ऐसे एमएसएमई उधारकर्ताओं पर अध्ययन केंद्रित किया गया है जिनकी समग्र जोखिम सीमा ₹10 लाख से 50 करोड़ तक है।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि नई ऋण सहायता प्राप्त करने या ऋण के नवीनीकरण कराने वाले उधारकर्ताओं की सं. ति. 2 -विव 18 में 2.2 लाख से बढ़कर ति. 2 -विव 19 में 2.7 लाख हो गई, जिससे 24% की वृद्धि दर्ज हुई है। अधिगृहीत कुल खातों की संख्या ति. 2 -विव 18 में 3.6 लाख से बढ़कर ति. 2 -विव 19 में 4.6 लाख हो गई जोकि 26% की वर्ष-दर-वर्ष संवृद्धि प्रदर्शित करती है। अध्ययन से यह आशय रेखांकित होता है कि विश्लेषण में शामिल किए गए दो अधिग्रहण-अवधियों के दौरान, इन उधारकर्ताओं की खराब दर 2.94% से 3.02% तक बढ़ी है। उधारकर्ताओं के अधिग्रहण के प्रोफाइल की तुलना अधिग्रहण के समय सिबिल-एमएसएमई रैंक और उसके पुराने होने या नवीकरण और उधारकर्ता के सेगमेंट के कारकों के आधार पर की गई है।

अधिग्रहणों का घटक -वार विभाजन और एक वर्ष बाद श्रेणी में गिरावट

₹10 लाख - ₹50 करोड़ के खंड-विशेष वाले एमएसएमई उधारकर्ताओं को आगे भी ₹10 लाख-1 करोड़, ₹1-10 करोड़ और, ₹10- 25 करोड़, ₹25-50 करोड़ के उप-खंडों में वर्गीकृत किया गया है। ति. 2 -विव18, की अधिग्रहण-अवधि में , चार उप-खंडों में ऋण प्रदान करने की हिस्सेदारी क्रमशः 61.9%, 30.3%, 5.3% और 2.4% रही हैं। जबकि ति. 2 -विव19 में, एक साल के बाद की इसी अवधि हेतु ऋण देने की हिस्सेदारी क्रमशः 66.7%, 27.1%, 4.3% और 1.9% रही है। इससे स्पष्ट होता है कि एमएसएमई के अति लघु खंड में ऋण की हिस्सेदारी एक वर्ष के भीतर जुलाई-सितं 17 में 61.9% से बढ़कर 66.7% हो गई है। यद्यपि, अन्य तीन उप-खंडों में ऋण प्रदान करने की हिस्सेदारी में कमी आई। निम्न आकार के खंड में उधार की बड़ी हुई हिस्सेदारी, संबंधित खंड में व्याप्त उच्चतर खराब दर के साथ संयुक्त रूप से ति 02 -विव 19 के अधिग्रहण की खराब दर को बढ़ाने में योगदान दे रहा है।

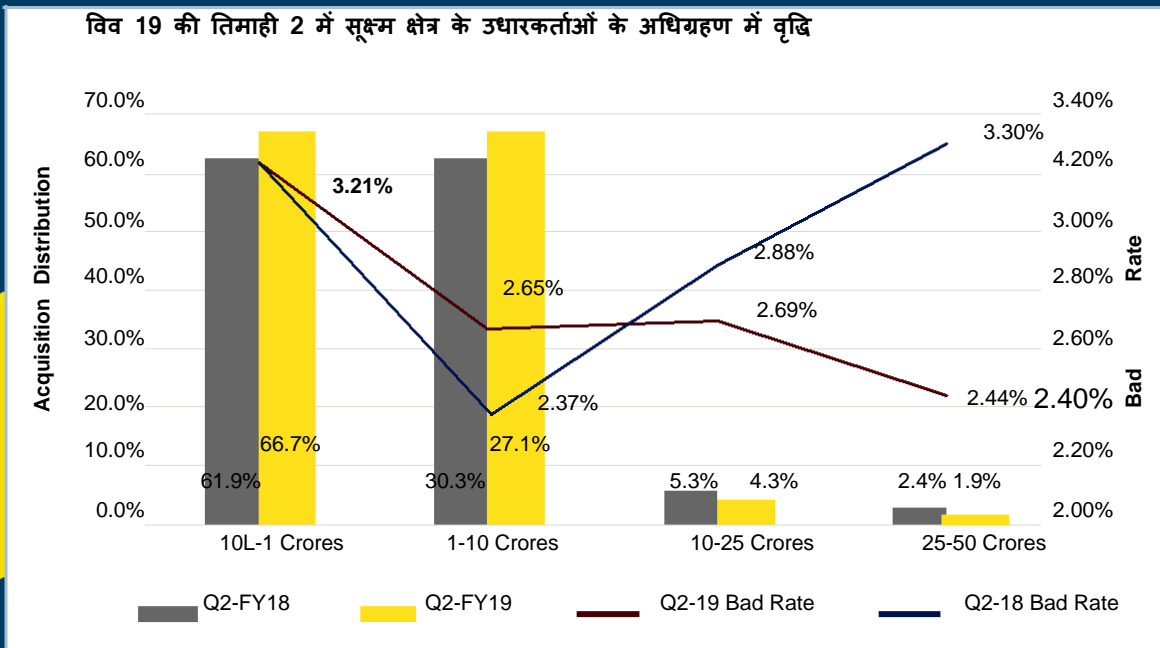
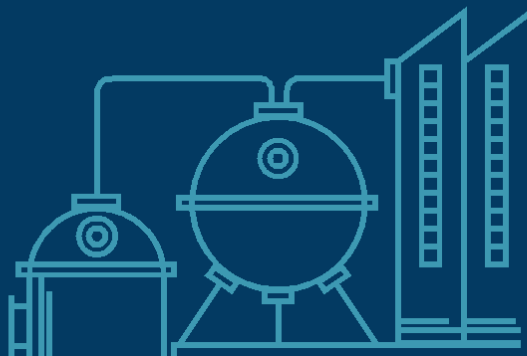
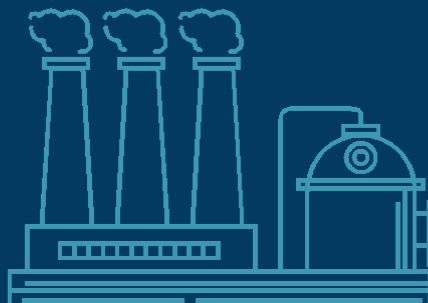
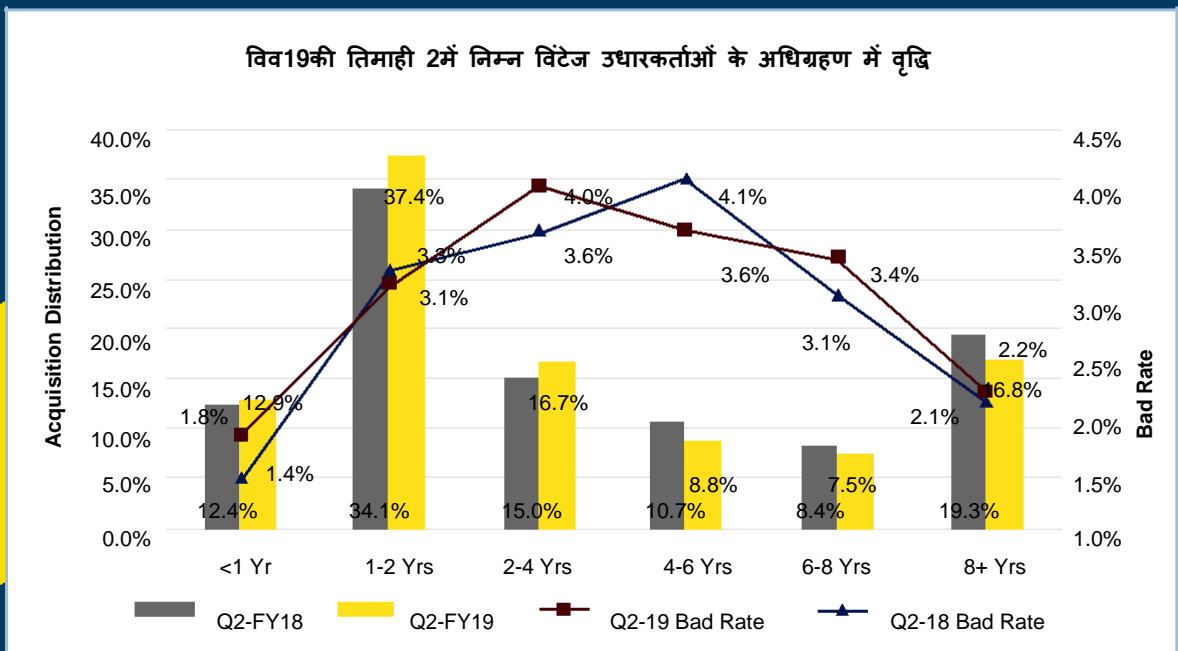


Exhibit 10-Segment wise acquisition distribution and Bad rate a year later



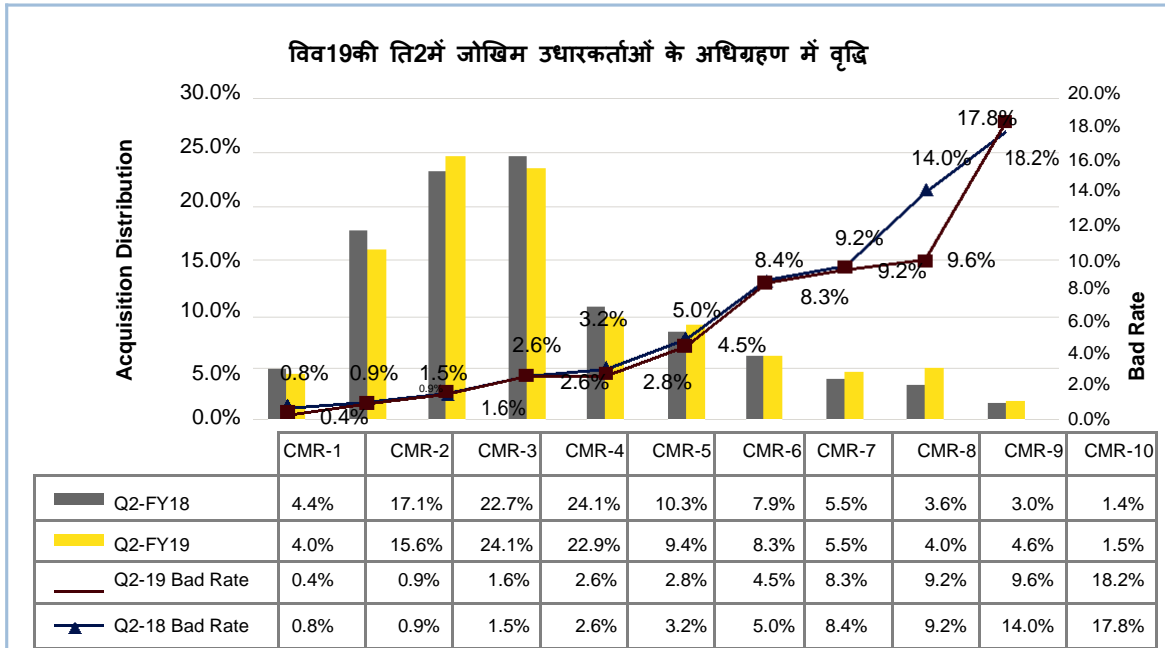
अधिग्रहणों का अवधि के अनुसार विभाजन और एक वर्ष के बाद श्रेणी में गिरावट

अध्ययन की सुगमता हेतु उधारकर्ताओं को अधिग्रहण के समय एमएसएमई की ऋण- परिपक्वता के आधार पर विंटेज आधारित विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था। उधारकर्ताओं को आगे <1 वर्ष, 1-2 वर्ष, 2-4 वर्ष, 4-6 वर्ष, 6-8 वर्ष और 8+ वर्ष से अधिक की अवधि की विंटेज श्रेणी में वर्गीकृत किया गया है। ति2-विव18 और ति2-विव19 में इन पुराने उधारकर्ताओं को ऋण प्रदान करने से संबंधित अनुपात एक्सिबिट 11. में दर्शाया गया है। अधिग्रहीत उधारकर्ताओं के विंटेज विभाजन पर केंद्रित अध्ययन से पता चलता है कि <2 वर्षों के विंटेज मानदंडों वाले उधारकर्ताओं का अनुपात उच्चतम है, जिसमें कुल अधिग्रहणों का ~50% शामिल है। नव अधिग्रहीत (0-1 वर्ष) की विंटेज श्रेणी और उच्चतर विंटेज श्रेणियों (4+ वर्ष) की तुलना में निम्न (1-4 साल) विंटेज श्रेणी में खराब दर का उच्चतम अनुपात दिखाई देता है।



अधिग्रहणों का सीएमआर विभाजन और एक वर्ष के बाद श्रेणी में गिरावट

खाता खोलने और नवीनीकरण के समय सीएमआर विभाजन का सदुपयोग कर उधारकर्ताओं के बदलते हुए प्रोफाइल का भी आकलन किया जाता है। सीएमआर एमएसएमई के लिए एक क्रेडिट स्कोर है जहां स्कोर आउटपुट का मूल्य 1 से 10 अंको के मध्य निर्धारित किया जाता है। सीएमआर -1 से सीएमआर -3 तक के एमएसएमई उद्यम सबसे कम जोखिमग्रस्त माने जाते हैं, सीएमआर -4 से सीएमआर -6 वाले उद्यम मध्यम जोखिम की श्रेणी में आते हैं और सीएमआर -7 से सीएमआर -10 वाले सबसे अधिक जोखिमग्रस्त समझे जाते हैं। सबसे कम जोखिम, मध्यम जोखिम और उच्चतम जोखिम वाले खंड में अधिग्रहण की हिस्सेदारी क्रमशः ति. 1 - वि.व. 18 में 44.3%, 42.3% और 13.5% है। जबकि इन खंडों में ऋण प्रदान करने की हिस्सेदारी ति. 2 - वि.व. 19 में 43.7%, 40.6% और 15.7% है। दो पृथक अधिग्रहण की समयावधि में अधिगृहीत उधारकर्ताओं के सीएमआर विभाजन से पता चलता है कि अपेक्षाकृत अच्छे सीएमआर सीमा में अधिग्रहण में स्थिरता कायम है, लेकिन ति. 1 - वि.व. 18 की तुलना में ति. 2 - वि.व. 19 में उच्चतम जोखिम वाले खंडों में वृद्धि हुई।



एक्जिबिट 12: अधिग्रहण का सीएमआर विभाजन एक वर्ष के बाद खराब दर

ति. 2-वि.व. 18 में अधिगृहीत उधारकर्ताओं की खराब दर सीएमआर-1 के लिए 0.8% से सीएमआर -10 के लिए 17.8% के बीच रही है। इसी तरह, ति. 02-वि.व 19 में अधिगृहीत उधारकर्ताओं की खराब दर सीएमआर-1 के लिए 0.4% से लेकर सीएमआर -10 के लिए 18.2% है। उच्चतम जोखिमग्रस्त खंड में अधिग्रहण के कारण ति. 2 -वि.व. 19 के अधिग्रहणों में उच्च तर खराब दर दर्ज हुई है।

गैर-निधि आधारित ऋण और विदेशी मुद्रा में ऋण पर एक अध्ययन

यह भाग भारत में गैर-निधि आधारित ऋण और विदेशी-मुद्रा में ऋण की प्रवृत्तियों को उद्घाटित करता है। सभी कार्यशील पूंजी और सावधि ऋणों को निधि आधारित ऋण के रूप में वर्गीकृत किया गया है और साख-पत्र और बैंक गारंटी से हमारा आशय गैर-निधि आधारित ऋण है। गैर-निधि आधारित उधार प्रदान करने की प्रक्रिया में उधार देने वाला बैंक धन का कोई भी भौतिक संव्यवहार नहीं करता। व्युत्पन्नी-ऋणों को विदेशी मुद्रा ऋण के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

सितम्बर, 18 से सितम्बर, 19 के मध्य गैर-निधि आधारित ऋणों की वर्ष-दर-वर्ष संवृद्धि दर 9.5% है। निधि आधारित, गैर-निधि आधारित और विदेशी मुद्रा ऋण सहित समग्र ऋणों में सित., 18 से सित., 19 तक 8.4% तक की वृद्धि हुई है। व्यावसायिक ऋण प्रदायगी के क्षेत्र में गैर-निधि आधारित ऋण और विदेशी मुद्रा-ऋण की सभी क्षेत्रों में संयुक्त हिस्सेदारी 15.6% रही है।

	निधि आधारित ऋण (कार्यशील पूंजी और सावधि ऋण)	गैरनिधि आधारित ऋण (साख-पत्र और बैंक गारंटी)	विदेशी	समग्र ऋण
सित 17	49.42	7.82	1.36	58.60
दिस'17	53.01	8.39	1.51	62.91
मार्च'18	57.60	8.75	1.62	67.97
जून'18	56.45	8.88	1.76	67.09
सित'18	60.17	9.11	1.82	71.10
दिस'18	61.63	8.75	1.89	72.27
मार्च'19	64.85	10.54	1.94	77.33
जून'19	64.80	9.54	2.02	76.35
सित'19	65.04	9.98	2.06	77.09
वर्ष दर वर्ष वृद्धि (सित'18 – सित'19)	8.1%	9.5%	13.4%	8.4%

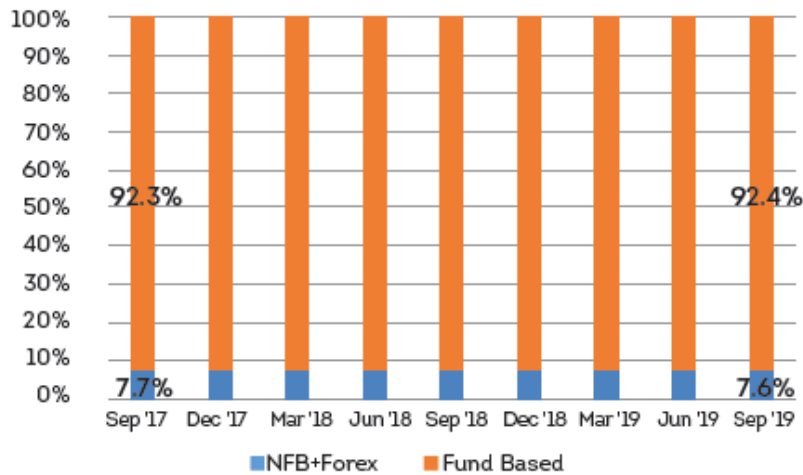
एक्जिबिट 13: भारत में कुल व्यावसायिक उधारियाँ (लाख करोड़ में)
खंड -वार ऋण वितरण

यथा सित, 19 तक, निधि आधारित ऋणों का अनुपात कुल ऋण का 84.4% है और बाजार में विदेशी मुद्रा सहित गैर-निधि आधारित ऋणों की हिस्सेदारी 15.6% है। एमएसएमई खंड में गैर-निधि आधारित और विदेशी मुद्रा ऋणों का अनुपात 7.6% है, जबकि बड़े नैगम उद्यमों में इसकी हिस्सेदारी 18.4% है। एमएसएमई खंड में निधि आधारित ऋण 92.4% तक प्रदान किए गए हैं, जबकि बड़े नैगम उद्यमों में 81.6% तक निधि आधारित ऋण प्रदान किए गए हैं।

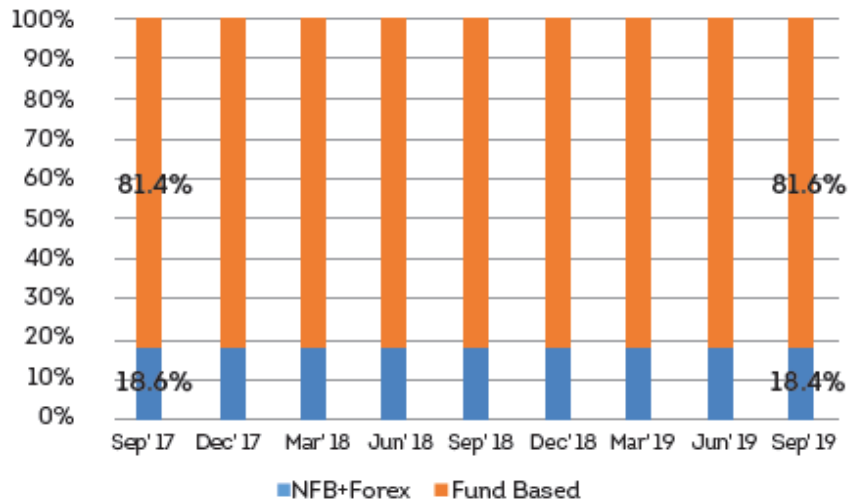
घटक	एनएफबी + विदेशी मुद्रा	निधि आधारित
सूक्ष्म	2.1%	97.9%
लघु	6.6%	93.4%
मध्यम	13.8%	86.2%
बड़े	18.4%	81.6%
कुल	15.6%	84.4%

प्रदर्शित: यथा सितंबर 19 में क्षेत्रवार ऋण प्रकार का अनुपात

एमएसएमई सेगमेंट में ऋणों का अनुपात



बड़े क्षेत्र में ऋणों का अनुपात



ऋण के सभी प्रकारों में ऋणदाता का हिस्सा : एनएफबी + विदेशी श्रेणी के ऋणों में निजी बैंकों का हिस्सा सबसे अधिक है। निजी बैंकों द्वारा एमएसएमईयों को दिए गए कुल ऋणों में से, एनएफबी + विदेशी श्रेणी के ऋणों का हिस्सा 10.3% और बड़े निगमों में यह एमएसएमईयों से भी अधिक अर्थात् 31.9% है।

	एमएसएमई क्षेत्र		बड़े निगम	
	एन एफ बी + विदेशी मुद्रा	निधि आधारित	एन एफ बी + विदेशी मुद्रा	निधि आधारित
सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम	7.4%	92.6%	14.2%	85.8%
निजी	10.3%	89.7%	31.9%	68.1%
गैर बैंकिंग वित्तीय कपनियाँ	0.4%	99.6%	0.5%	99.5%
अन्य	5.9%	94.1%	19.3%	80.7%
समग्र	7.6%	92.4%	18.4%	81.6%

एनएफबी और विदेशी मुद्रा में वृद्धि ऋण विकास में मंदी की भरपाई करने में मदद करेगी। निजी बैंकों ने स्पष्ट रूप से इस क्षेत्र में बढ़त बनाई है और यह बढ़ी शुल्क आय के रूप में भी उनकी आय में परिलक्षित होता है। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में भारतीय एमएसएमई और निगमों की बढ़ती भूमिका से, विदेशी मुद्रा में दिए जाने वाले ऋणों की प्रवृत्ति में बढ़ोत्तरी दिखाई पड़ रही है।

निष्कर्ष

खराब ऋणों के समाधान सहित पूँजी निवेश और वर्ष के दौरान निष्पादित निपटान नीतियों में पारदर्शिता जैसे कई उपायों से अनर्जक आस्तियों (एनपीए) में कुछ हद तक कमी आई हैं। ऐसे समय में जब प्रणाली में ऋण संवृद्धि धीमी होती जा रही है, सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किए जा रहे विभिन्न सुधार उपायों से विकास की स्थिति में क्रमशः सुधार होगा।

अस्वीकरण

यह एमएसएमई पल्स रिपोर्ट (रिपोर्ट) ट्रांसयूनियन सिबिल लिमिटेड (टीयू सिबिल) ने तैयार की है। रिपोर्ट को देखने और उपयोग करके उपयोगकर्ता यह स्वीकार एवं पुष्टि करता है कि यह उपयोग इस अस्वीकरण के अधीन है। यह रिपोर्ट जानकारी के परितुलन पर आधारित है, जो वस्तुतः टीयू सिबिल के सदस्य क्रेडिट संस्थानों द्वारा प्रदान की गयी हैं। यद्यपि टीयू सिबिल रिपोर्ट तैयार करने में उचित सावधानी बरतता है, तथापि टीयू सिबिल सटीकता, त्रुटियों और / या क्रेडिट संस्थानों द्वारा उन्हें प्रस्तुत त्रुटिपूर्ण या अपर्याप्त जानकारी के कारण हुई चूक के लिए उत्तरदायी नहीं होगा। इसके अलावा, टीयू सिबिल किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए रिपोर्ट और / या इसकी उपयुक्तता में सूचना की पर्याप्तता या पूर्णता की गारंटी नहीं देता है और न ही टीयू सिबिल रिपोर्ट की किसी भी निविष्टि पर निर्भरता के लिए जिम्मेदार है और टीयू सिबिल इस तरह के सभी उत्तरदायित्वों को स्पष्ट रूप से अस्वीकार करता है। यह रिपोर्ट किसी भी आवेदन, उत्पाद को निरस्त करने / उसे अस्वीकार करने या उसकी स्वीकृति के लिए सिफारिश नहीं है और न ही (i.) उधार देने या न देने के लिए टीयू सिबिल की कोई सिफारिश है ; (ii) संबंधित व्यक्ति / संस्था के साथ किसी भी वित्तीय संव्यवहार करने या नहीं करने के लिए भी कोई सिफारिश नहीं है। रिपोर्ट में निहित जानकारी परामर्श नहीं है और उपयोगकर्ता को इस रिपोर्ट में निहित जानकारी के आधार पर कोई भी निर्णय लेने से पहले स्वयं की राय में विवेकपूर्ण सभी आवश्यक विश्लेषण करना चाहिए। रिपोर्ट का प्रयोग ऋण सूचना संबंधी कपनियों के (विनियम) अधिनियम, 2005, ऋण सूचना संबंधी कपनियों के विनियम, 2006, ऋण सूचना संबंधी कपनियों के लिए नियम, 2006 के प्रावधानों के अनुसार अभिशासित है। पूर्व अनुमोदन के बिना रिपोर्ट के किसी भी अंश की प्रतिलिपि न तो बनाई, परिचालित, प्रकाशित की जानी चाहिए।

सिडबी के बारे में

भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी), एमएसएमई क्षेत्र के संवर्धन, वित्त पोषण और विकास के लिए और समान गतिविधियों में संलग्न संस्थानों के कार्यों के समन्वय के लिए प्रमुख वित्तीय संस्था है। सिडबी के व्यावसायिक क्षेत्र में एमएसएमई शामिल हैं, जो उत्पादन, रोजगार और निर्यात के रूप में राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। सिडबी एमएसएमई क्षेत्र की वित्तीय और विकासात्मक जरूरतों को क्रेडिट प्लस दृष्टिकोण से पूरा करता है ताकि इसे मजबूत, जीवंत और विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाया जा सके। अधिक जानकारी के लिए www.sidbi.in देखें ।

ट्रांसयूनियन सिबिल के बारे में

ट्रांसयूनियन सिबिल भारत की अग्रणी क्रेडिट सूचना कंपनी है और विश्व भर में क्रेडिट जानकारी के वृहतर भंडारों में से एक है। हमारे पास 3000 से अधिक सदस्य हैं-जिनमें सभी अग्रणी बैंक, वित्तीय संस्थाएँ, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियाँ और हाउसिंग फाइनेंस कंपनियाँ शामिल हैं- और व्यक्तियों और व्यवसायों के 900 मिलियन से अधिक क्रेडिट रिकॉर्ड का रखरखाव करती हैं।

हमारा ध्येय सूचना समाधान का सृजन है, जिससे व्यवसाय संवृद्धि सुलभ हो और उपभोक्ताओं को क्रेडिट और अन्य सेवाओं की त्वरित एवं सस्ती पहुंच में सक्षमता प्रदान करता है। हम जोखिम प्रबंधन के माध्यम से अपने सदस्यों के लिए अमूल्य आधार का सृजित करते हैं और लागत कम करने और संविभाग की लाभप्रदता बढ़ाने के लिए उपयुक्त उधार रणनीतियाँ तैयार करने में मदद करते हैं। उपभोक्ता और वाणिज्यिक उधारकर्ताओं के बारे में व्यापक, विश्वसनीय जानकारी से, वे व्यक्तियों और व्यवसायों के बारे में सुदृढ़ ऋण निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। सूचना- शक्ति के माध्यम से, ट्रांसयूनियन सीबिल एक सुदृढ़ अर्थव्यवस्था निर्माण के लिए हमारे सदस्यों के ऋण निवेश अभियान और वित्तीय समावेशन के लिए प्रयासरत है।

अच्छाई के लिए हम इस जानकारी की मांग करते हैं।



TransUnion.  CIBIL

ट्रान्सयूनियन सिबिल

[पूर्व क्रेडिट इन्फॉर्मेशन ब्यूरो (इंडिया) लिमिटेड

सिन /CIN: U72300MH2000PLC128359

P: 6638 4600

F: 6638 4666

W: transunioncibil.com

वन इंडियाबुल सेंटर , टावर -2 ए , 19वीं मंजिल

सेनापति बापट मार्ग, एलिफीन्स्टन रोड,

मुंबई - 400 013.

